UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 81-87

"शिक्षकों की कक्षा शिक्षण दक्षता का अध्ययन"

सुनिता ठोंबरे
(शोधार्थी, प्राध्यापिका, एनीबेसेन्ट कॉलेज)

सारांश :–
शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति में शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अतः यह माना जाता है कि यदि हमें शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारना है, तो पहले शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारना होगा। किसी राष्ट्र के विकास में उच्च शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। यह शिक्षा उच्च गुणवत्तापूर्ण होनी चाहिए। शिक्षा की गुणवत्ता बहुत हद तक शिक्षक के व्यवहार से प्रभावित होती है, जिसे छात्र शिक्षक परस्पर अंतःक्रिया के अवलोकन से ज्ञात किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में कक्षा में शिक्षकों के व्यवहार को ज्ञात किया गया है। इस शोध द्वारा यह तथ्य सामने आया है कि व्याख्यान के साथ नोट्स देने तथा छात्रों को पृष्ठपोषण देने में 67–70 प्रतिशत शिक्षक प्रभावी है जबकि शिक्षिकाओं का मात्र 33 प्रतिशत है, वहीं छात्रों को उचित दिशा निर्देशन देने में शिक्षिकाएँ अधिक दक्ष पाई गई। अध्ययन से स्पष्ट है कि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बदलाव लाने की आवश्यकता है, जिससे कि शिक्षक अपने छात्रों से संबंध बनाने में दक्ष हो पाएँ। यही नहीं यह शोध सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता को भी रेखांकित करता ळें

प्रस्तावना :–
किसी शिक्षा के प्रसार में वृद्धि करके तथा शिक्षा स्तर देश के विकास के लिए आवश्यक है कि उच्च शिक्षा में शिक्षा तथा गुणवत्ता, उत्कृष्टता और अनुसंधान की शक्ति को बढ़ाया जाए। शिक्षा के प्रसार का लाभ तब तक नहीं मिल सकता जब तक शिक्षा गुणवत्तायुक्त न हो। यदि उच्च शिक्षा अध्ययन केन्द्र से निकलने वाले विद्यार्थी गुणवत्तायुक्त मानव संसाधन के रूप में कार्य करते हैं, तो राष्ट्र की प्रगति निश्चय व सहज रूप से होगी। विद्यार्थियों की उपलब्धि शिक्षक व्यवहार से प्रभावित होती है तथा छात्रों में मनुष्योचित अभिवृत्ति के विकास के लिए शिक्षक सबसे महत्वपूर्ण कारक होता है। संपूर्ण शिक्षा प्रणाली का विस्तार शिक्षक की गुणवत्ता पर निर्भर है।

एक सुव्यवस्थित अवलोकन प्रणाली में निर्देशात्मक अधिगम, शिक्षक छात्र परस्पर अंतक्रिया की पहचान तथा शिक्षक वर्गीकरण का पूर्ण प्रतिनिधित्व होता है। कक्षा–शिक्षण, शिक्षक और छात्र के बीच परस्पर अंतःक्रिया की प्रक्रिया होती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि अवलोकन पद्धति द्वारा शिक्षण गतिविधियों, शिक्षण दक्षता तथा इसके घटकों के प्रति जागरूकता उत्पन्न की जा सकती है। चूँकि किसी देश का विकास गुणवत्तायुक्त शिक्षा से प्रभावित होता है और शिक्षा की गुणवत्ता शिक्षक व्यवहार से प्रभावित होती है। शिक्षक व्यवहार को छात्र शिक्षक परस्पर अंतक्रिया के अवलोकन द्वारा ज्ञात किया जा सकता है।

अध्ययन के उद्देश्य –
1. उच्च शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की शाब्दिक कक्षा शिक्षण दक्षता की तुलना करना।
2. उच्च शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अशाब्दिक कक्षा शिक्षक दक्षता की तुलना करना।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 81-87

परिकल्पनाएँ –

1. अ– उच्च शिक्षा स्तरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की शाब्दिक प्रत्यक्ष कक्षा शिक्षण दक्षता में सार्थक अंतर नहीं है।
2. उच्च शिक्षा स्तरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की शाब्दिक अप्रत्यक्ष कक्षा शिक्षण, कक्षा चित्रण दक्षता में सार्थक अंतर नहीं है।

अतः शिक्षकों के कक्षा व्यवहार को ज्ञात करने का प्रयास प्रस्तुत शोध प्रपत्र में किया गया है ताकि यह ज्ञात किया जा सके कि कक्षा शिक्षण के किन क्षेत्रों में शिक्षकों का व्यवहार शिक्षण दक्षता के अनुरूप है तथा कहां उन्हें अधिक प्रशिक्षण की आवश्यकता है ताकि वे भविष्य में एक योग्य शिक्षक बन सके।

शिक्षकों की शिक्षण दक्षता पर पासी और शर्मा 1982 ने माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शिक्षण दक्षता को लेकर एक अध्ययन किया तथा अध्ययन से प्राप्त किया कि प्रश्न पूछना, पाठ का प्राक्कथन देना, कक्षा व्यवस्थापन करना, श्यामपट का प्रयोग करना, उचित भाषा के पाठ्य को प्रस्तुत करना इत्यादि शिक्षण विधियों के प्रति 70–80 प्रतिशत शिक्षकों में दक्षता पायी गयी।

शिक्षक का व्यक्तित्व पर पांडियन (1983) ने शिक्षक के व्यक्तित्व, अधिगम शैली और शिक्षण योजना के बीच सामान्य संबंध का प्रत्यात्मक अवलोकन किया। निष्कर्ष में पाया गया कि शिक्षक का व्यक्तित्व अधिगम शैली उसकी शिक्षण योजना को प्रभावित होती है।

प्रदत्त संकलन –

प्रदत्तों के संकलन के लिए प्रत्येक शिक्षक के कक्षा–शिक्षण व्यवहार का तीन–तीन बार अवलोकन किया गया है।

प्रदत्त विश्लेषण –

प्रस्तुत समस्या अर्थात् उच्च शिक्षा स्तरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की शाब्दिक शिक्षण दक्षता के तुलनात्मक अध्ययन के लिए काई वर्ग (X^2) तथा प्रतिशत विश्लेषण का प्रयोग किया गया है।

2 (अ) उच्च शिक्षा स्तरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अशाब्दिक नकारात्मक कक्षा शिक्षण दक्षता में सार्थक अंतर नहीं है।

समष्टि तथा न्यादर्श –

प्रस्तुत समस्या के अध्ययन हेतु देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के महाविद्यालय में कार्यरत समस्त शिक्षकों को समष्टि के रूप में सम्मिलित किया गया है। प्रादर्श हेतु कॉमर्स संकाय में अध्यापनरत् कुल 30 शिक्षकों का चयन किया गया है जिसमें 15 शिक्षक 15 शिक्षिकाओं को लिया गया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत समस्या के अध्ययन के लिए शोधकर्ताओं द्वारा निर्मित 'कक्षा अवलोमन मापनी' का निर्माण किया गया है।

अवलोमन मापनी का निर्माण –

इस मापनी में शिक्षण के उन शिक्षण व्यवहारों को सम्मिलित किया गया है। जिनका प्रयोग शिक्षकों के द्वारा कक्षा अध्यापन मापनी के निर्माण के लिए ''लैडर्स की श्रेणी प्रणाली'' (Category system) का अनुकरण किया है तथा इस कक्षा अवलोकन मापनी को मुख्यतः दो भागों में बांटा गया है।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 81-87

शाब्दिक कक्षा शिक्षण दक्षता की व्याख्या –

तालिका 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि कक्षा में छात्रों को अधिक सीखने के लिए 'प्रोत्साहित करना' पर कोई वर्ग का मान 8.43 है, जो कि (df=2) के .05 सार्थकता स्तर के तालिका मान से अधिक ह।

तालिका – 1

शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की प्रत्यक्ष कक्षा शिक्षण दक्षता की तुलना के लिए x^2 परीक्षण

क्र. सं.	पद	शिक्षक				शिक्षिकाएँ				अवलोकन x^2 (2x3 मान पर) df = 2
		अधिक प्रभावी	कम प्रभावी	अप्रभावी	योग	अधिक प्रभावी	कम प्रभावी	अप्रभावी	योग	
1	उपयुक्त शिक्षण सामग्री का चयन करना	11 (73.33)	3 (20.00)	1 (6.67)	15	8 (53.33)	2 (13.33)	5 (33.33)	15	5.08
2.	शिक्षक द्वारा कक्षा को रूचिकर बनाना	9 (60)	4 (26.67)	2 (13.33)	15	7 (46.67)	5 (33.33)	3 (20)	15	0.818
3.	कक्षा में छात्रों को अधिक सीखने के लिए प्रोत्साहित करना	10 (66.67)	3 (20)	2 (13.33)	15	6 (40)	2 (13.33)	7 (46.67)	15	8.43
4.	शिक्षक द्वारा छात्रों से प्रश्न पूछना –									
	1.ज्ञानात्मक प्रश्न	9 (60)	3 (20)	3 (20)	15	5 (33.33)	3 (20)	7 (46.67)	15	3.75
	2. अभिसमणात्मक प्रश्न	5 (33.33)	2 (13.33)	8 (53.33)	15	3 (20.00)	1 (6.67)	11 (73.33)	15	1.84
	3. अपसरणात्मक प्रश्न	4 (26.67)	1 (6.67)	10 (66.67)	15	3 (20.00)	1 (6.67)	11 (73.33)	15	2.61

.05 स्तर पर सार्थक

तालिका – 2

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 81-87

शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के मध्य प्रत्यक्ष कक्षा शिक्षण दक्षता की तुलना के लिए x^2 परीक्षण की तालिका

क्र. सं.	पद	शिक्षक				शिक्षिकाएँ				अवलोकन x^2 (2x3 मान पर) df = 2
		अधिक प्रभावी	कम प्रभावी	अप्रभावी	योग	अधिक प्रभावी	कम प्रभावी	अप्रभावी	योग	
1	कक्षा में व्याख्यान के साथ नोट्स देना	11 (73.23)	3 (20)	1 (6.67)	15	5 (33.33)	4 (26.67)	6 (40)	15	10.38**
2.	छात्रों को उचित दिशा में निर्देशित करना	6 (40)	2 (13.33)	7 (46.67)	15	10 (66.67)	3 (20)	2 (13.33)	15	6.67*
3.	पाठ के उपयुक्त उदाहरण देना	9 (60)	2 (13.33)	4 (26.67)	15	7 (46.67)	4 (26.67)	4 (26.67)	15	1.26
4.	छात्रों द्वारा पूछे गये प्रश्नों का उत्तर देना	9 (60)	4 (26.67)	2 (13.33)	15	8 (53.33)	4 (26.67)	3 (20)	15	2.72
5.	छात्रों को उद्बोधित करना (i) वर्तमान तथ्यों के प्रति	8 (53.33)	3 (20)	4 (26.67)	15	8 (53.33)	3 (20)	4 (26.67)	15	2.71
	(ii) विषयों के प्रति	10 (66.67)	3 (20)	2 (13.33)	15	8 (53.33)	3 (20)	4 (26.67)	15	2.63
6.	कक्षा में स्पष्ट भाषा का प्रयोग करना	10 (66.67)	4 (26.67)	1 (6.67)	15	10 (66.67)	3 (20)	2 (13.33)	15	.832
7.	अनुशासनात्मक वातावरण का निर्माण करना	11 (73.23)	3 (20)	1 (6.67)	15	8 (53.33)	4 (26.67)	3 (20)	15	4.58
8.	छात्रों को उचित पृष्ठपोषण देना	10 (66.67)	4 (26.67)	1 (6.67)	15	5 (33.33)	4 (26.67)	6 (40)	15	10.46**

**/*.01/05 स्तर पर सार्थक

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 81-87

अतः इसे .05 सार्थकता स्तर पर स्वीकार किया जाता है। इस दक्षता के लिए नकारात्मक परिकल्पना को अस्वीकार करते हुए कह सकते हैं कि इलाहाबाद विश्वविद्यालय में कार्यरत शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की प्रत्यक्ष कक्षा शिक्षण दक्षता की इस शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर है।

प्रतिशत विश्लेषण से अवलोकित होता है कि जहाँ अधिकाधिक 66.67% शिक्षक तो वहीं केवल 36.67% शिक्षिकाएँ ही छात्रों को अधिक सीखने के लिए प्रभावी ढंग से प्रोत्साहित करती है।

इसी प्रकार कक्षा शिक्षण में 'उपयुक्त शिक्षण सामग्री का प्रयोग करना' जैसे शिक्षण व्यवहार के जहाँ 73.33% शिक्षक तो वहीं केवल 50% शिक्षिकाएँ ही प्रभावी ढंग से कखा में उपयोग करती है।

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि अन्य सभी शिक्षण दक्षताओं के लिए जैसे – शिक्षक द्वारा कक्षा को रूचिकर बनाना तथा छात्रों से प्रश्न पूछना जैसे पदों के लिए शिक्षक तथा शिक्षिकाओं दोनों का ही कक्षा शिक्षण व्यवहार लगभग समान पाया गया।

तालिका 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि कक्षा शिक्षण के अप्रत्यक्ष शिक्षण दक्षता का जब अवलोकनात्मक विश्लेषण काई वर्ग के माध्यम से किया गया तो छात्रों को 'उचित दिशा में निर्देशित करना' जैसे शिक्षण व्यवहार का काई वर्ग मान 6067 आया जो कि (df=2) के 0.5 के सार्थकता स्तर से अधिक है। अतः यह पद .05 स्तर पर सार्थक है। दक्षता के लिए नकारात्मक परिकल्पना को अस्वीकार करते हुए कह सकते हैं कि शिक्षकों तथा शिक्षिकाओं के शिक्षण व्यवहार में इस पद के लिए अन्तर पाया गया।

अन्य पदों जैसे 'कक्षा में व्याख्यान के साथ नोट्स देना' तथा छात्रों को 'उचित पृष्ठपोषण देना' के लिए शिक्षक क्रमशः 70% तथा 67% दक्षता प्रदर्शित करते हैं तो वहीं मात्र 34% तथा 33% शिक्षिकाएँ ही इनके प्रति दक्षता को प्रदर्शित करती है। अर्थात् हम कह सकते हैं कि इन पदों के लिए शिक्षक समूह शिक्षिका समूह से अधिक प्रभावी है।

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि अन्य कक्षा शिक्षण व्यवहार के प्रति शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के प्रभाव का प्रतिशत लगभग समान स्तर का है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि 'व्याख्यान के साथ नोट्स देना', 'छात्रों को उचित दिशा में निर्देशित करना', इत्यादि शिक्षण व्यवहारों के प्रति शिक्षकों द्वारा शिक्षिकाओं की अपेक्षा अधिक दक्षता प्रदर्शित की गयी।

नकारात्मक कक्षा अंतःक्रिया

- कक्षा अवलोकन के समय पाया गया कि 50% शिक्षक तथा 54% शिक्षिकाएँ कक्षा में सख्त बने रहना पसंद करती है जिसका कारण यह हो सकता है कि अधिकतर शिक्षकों द्वारा माना जाता है कक्षा में छात्रों से अधिक मित्रवत व्यवहार करना कक्षा में अनुशासनहीनता को बढ़ावा देता है।
- 43% शिक्षकों तथा 52% शिक्षिकाओं द्वारा कक्षा में चिड़चिड़ापन प्रदर्शित किया गया अर्थात् इनके द्वारा कक्षा शिक्षण के समय बात–बात पर छात्रों पर नाराजगी व्यक्त की गयी तथा छात्रों को परस्पर अन्तःक्रिया का अवसर नहीं दिया गया।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 81-87

- 37% शिक्षकों तथा 36% शिक्षिकाओं द्वारा कक्षा में उदासीनता का भाव व्यक्त किया गया अर्थात् शिक्षकों द्वारा कक्षा शिक्षण के समय कक्षा वातावरण तथा शिक्षण के प्रति अपने व्यवहार से कोई विशेष लगाव नहीं प्रदर्शित करते नहीं पाया गया।

निष्कर्ष –

अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित है –

- कक्षा में व्याख्यान के साथ नोट्स देना तथा छात्रों को अध्ययन के लिए उचित पृष्ठपोषण देना, जैसे शिक्षण व्यवहार को जहाँ 67–70% शिक्षकों द्वारा अधिक प्रभावी ढंग से व्यक्त किया गया वहीं मात्र 33% शिक्षिकाएँ ही इस शिक्षण व्यवहार को प्रभावी ढंग से करती है।
- 67% शिक्षकों तथा 37% शिक्षिकाओं द्वारा कक्षा में छात्रों को सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
- 63% शिक्षिकाएँ तथा 40% शिक्षकों द्वारा छात्रों को उचित दिशा में निर्देशित करते हुए पाया गया। इस प्रकार स्पष्ट है कि छात्रों को निर्देशन देने के संबंध में शिक्षिकाएँ, शिक्षकों की अपेक्षा छात्रों को अधिक प्रभावित करती है।

इसके अतिरिक्त ऐसे शिक्षण व्यवहार जिनके प्रति नियमित शिक्षक तथा संपर्क कक्षा शिक्षकों के मध्य कोई अन्तर नहीं पाया गया वे निम्नलिखित है –

(1) कक्षा में व्याख्यान के अनुरूप उदाहरण देना।
(2) छात्रों को उद्बोधित करना।
(3) कक्षा में स्पष्ट भाषा का प्रयोग करना।
(4) कक्षा में अनुशासनात्मक वातावरण का निर्माण करना।
(5) उपयुक्त शिक्षण सामग्री का चयन करना।
(6) कक्षा को रूचिकर बनाना।
(7) कक्षा में छात्रों से उचित संबंध बनाना।

उपर्युक्त अवलोकन से स्पष्ट होता है कि व्याख्यान के साथ नोट्स देना, छात्रों को उचित पृष्ठपोषण देना तथा छात्रों को अधिक सीखने के लिए प्रोत्साहित करना जैसी दक्षता के लिए शिक्षक, शिक्षिकाओं की अपेक्षा अधिक दक्ष पाये गए जिसका कारण शिक्षकों को छात्रों से सहज संबंध स्थापित करने का अधिक समय मिलना हो सकता है। अतः वे छात्रों की अकादमिक कमजोरियों का ज्ञान रखते हैं और वे छात्रों को उचित निर्देशन तथा पृष्ठपोषण देने में समर्थ होते हैं किंतु छात्रों को 'उचित दिशा में निर्देशित करना' जैसे पद के लिए शिक्षिकाएँ शिक्षकों की अपेक्षा अधिक दक्षता में व्यक्त करती हैं जिसका कारण शिक्षिकाओं का शिक्षण व्यवसाय तथा छात्रों के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझना हो सकता है।

इसके अतिरिक्त अन्य पदों पर शिक्षकों के व्यवहार में कोई अन्तर नहीं पाया गया, जिसका कारण दोनों की समूह के शिक्षण करने वाले शिक्षक द्वारा अनिवार्य योग्यताओं की पूर्ति करना है।

अध्ययन से स्पष्ट है कि शिक्षकों द्वारा कुछ शिक्षण दक्षताओं जैसे –'कक्षा में प्रश्न पूछना' कक्षा को रूचिकर बनाना तथा उचित शिक्षण सामग्री का प्रयोग करना के प्रति बहुत ही कम दक्षता प्रकट होती है। अध्ययन से अवलोकित होता है कि कक्षा में जो प्रश्न पूछा जाता है वह सामान्यतः स्मृति आधारित प्रश्न ही होता है न कि छात्रों के चिंतन को उद्बोधित करने वाला।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 81-87

सुझाव –

- उच्च शिक्षा स्तर पर कार्यरत अध्यापकों को छात्रों से सहज संबंध बनाने के लिए प्रशिक्षण दिया जाए।
- शिक्षकों को छात्रों को स्वयं सीखने के लिए उद्‌बोधित करना चाहिए।
- शिक्षकों द्वारा कक्षा अनुशासनात्मक वातावरण के निर्माण के लिए उचित शिक्षण विधि को अपनाया जाना चाहिए।
- शिक्षकों को अपने विषय तथा सामान्य शिक्षण दक्षता में और अधिक दक्ष होने के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- कक्षा में शिक्षकों व छात्रों का अनुपात उचित हो ताकि शिक्षक छात्रों से प्रभावी ढंग से सम्प्रेषण कर सकें।
- शैक्षणिक संस्थाओं में दक्ष और योग्य शिक्षकों की नियुक्ति की जानी चाहिए।

संदर्भ –

- कुमार, निरंजन, अभावों से घिरी उच्च शिक्षा, दैनिक जागरण, 14 अक्टूबर 2008ण
- भारत का राजपत्र, विश्वविद्याालय अनुदान आयोग (एम.फिल./पी–एच.डी. उपाधि के लिए न्यूनतम मानक एवं प्रक्रिया) विनिमय, 2009, भाग–III, खण्ड–4, पृष्ठ–4050, 4051, प्राधिकार से प्रकाशित, 11 जुलाई 2009.
- सिंह, आर.पी. 2008. क्वॉलिटी एश्योरेन्स इन एजुकेशनल रिसर्च – अ क्वेस्ट फॉर पासिबिलिटी, यूनिवर्सिटी न्यूज, 46 (48), 10.
- तिवारी, जी.एन. 2001 ए स्टडी ऑफ टीचर्स कॉम्पिटेन्सी एण्ड ट्रेनिंग नीड्स ऑफ प्राइमरी स्कूल टीचर्स ऑफ इलाहाबाद डिस्ट्रिक्ट, अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
- भाटिया, आर. 2006 वैल्यू एजुकेशन इन टीचर्स एजुकेशन इश्यू ऑफ कन्सर्न' यूनिवर्सिटी न्यूज वॉल्यूम 44, ए.आई.यू. नई दिल्ली
- शर्मा, आर.ए. 2005 एनालिसिस क्लास रूम टीचर बीहैवियर, टीचर एजुकेशन, लॉयल बुक डिपो, मेरठ
- शर्मा, जे.पी. 2006 ट्रेनिंग एण्ड डेवलपमेंट ऑफ द एकेडमिक स्टॉफ – ए स्टडी, यूनिवर्सिटी न्यूज, नई दिल्ली।